JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नरेश मेहता के प्रबंध काव्यों में मनवीय संवेदना

शोधार्थी–आरती सिंह ठाकुर

निर्देशक–प्रो॰ नरेन्द्र सिंह राजपूत

महाराजा छत्रशाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय

नरेश मेहता मूलतः सर्जक हैं। बहुमुखी प्रतिभा के साहित्यकार हैं। साहित्य की जितनी विधाएं है।उनमे नरेश मेहता ने महारत हासिल की है।जैसे–कविता,कहानी उपन्यास नाटक,निबंध साहित्य की सभी प्रतिनिधित्व विद्याओं में इन्होंनें अधिकार के रूप में लिखा हैं।नरेश मेहता कवि के रूप मे प्रसिद्ध उनके चार प्रबंध काव्य की वजह से है।संशय की एक रात ,महाप्रस्थान,प्रवाद पर्व,शबरी यह उनके प्रबंघ काव्य है।नरेश मेहता दूसरे सप्तक और नई कविता के महत्वपूण कवि है।दूसरे सप्तक मे नरेश मेहता और र्धमवीर भारती ऐसे रचनाकार है जिनहोंनें मृथक को अपनी कविता का आधार बनाया है और इसके कारण वे अपनी अलग पहचान बनाते हैं ।

नरेश मेहता एक ऐसे कवि है जिनहोंनें आर्स चिंतन (आर्स साहित्य) को अपनी रचना का आधार बनाया उसे आर्स साहित्य कहते हैं जो किसी पुरानी ऋषि द्वारा जो चिन्तन किया गया है, या जो आर्स साहित्य लिख गया है।नरेश मेहता का कथन है कि समकालीनता की अभिव्यक्ति के लिए समकालीनता से जोडना अनिवार्य नही है।बल्कि आर्स चिन्तन और मिथक के माध्यम से वर्तमान की सशक्त अभिव्यक्ति हो सकती हैं। अतीत से विषय लेकर भी वर्तमान की पृष्ठभूमि मे अपने विचारो को व्यक्त कर सकते है।

मालवा के कस्बे शाजापुर में 15 फरवरी 1922 को पूर्णशंकर का जन्म हुआ ।सन् 1940 में नरसिंह गढ़ की राजमाता ने काव्य सभा में इनकी कविता से प्रसन्न होकर ''नरेश''उपनाम दिया ।यह नाम पूर्णशंकर को इतना अच्छा लगा कि इस नाम को ही अपना लिया –''नरेश कुमार मेहता''जो आगे चलकर नरेश मेहता के नाम से प्रसिद्ध हुआ।श्री नरेश मेहता हिंदी के उन शीर्षस्थ लेखको मे से हैं, जो भारतीयता की अपनी गहरी दृष्टि के लिए जाने जाते है।भारतीय साहित्यक परिदृश्य मे इनका स्वतंत्र महत्व इसलिए भी है कि सर्जनात्मकताओं की सीमाओ के प्रति शब्द के व्यबहार, प्रकृति और कॉस्मिक यथार्थ के प्रति इनका अपना दृष्टि कोण है।इनकी

समकालीनता,इनही के शब्दो में,अपने रूप,रंग और गंध में प्रकृति के रहस्यो से वंचित नहीं है।भावनात्मक संवेदना इनकी सृजनात्मकता का मूल तत्व है।[1]

'संशय की एक राम' में कवि ने राम के भीतर युद्ध के प्रति संशय पैदा कर एक आधुनिक मनुष्य की चिंता प्रकट की है,राम के चरित्र की पुर्नरचना की है,जिसकी संभावना राम के चरित्र में है और निश्चय ही यह कृति हिंदी साहित्य की उपलब्धि है।नरेश जी की दृष्टि में राम सनातन प्रज्ञा पुरूष हैं,ऐसा प्ररूष स्वयं तो इतिहास मुक्त होता है , पर इतिहास किसे मुक्त करता हैं ? क्योकि इतिहास किसी की व्यक्तिगत निर्मिति नहीं हैं फिर भी वह अपने प्रश्नो के उत्तर हर युग में प्रज्ञा पुरूष से मागता है।यही अभूतपूर्व संकट राम के सामने है,जो ना वल्मीकि के राम के सामने था, ना तुलसी के राम के सामने ना अन्य कवि के राम के सम्मुख।राम के सामने संशय यह है कि सीता के लिए युद्ध करना सार्वत्रिक है या व्यक्गित ? क्योकि राम व्यक्तिगत युद्ध मे सेना को,प्रजा को झोकना नही चाहते ।संशय राम का है पर उत्तर उन्हें अकेले नही देना है,इतिहास–निर्माता जो घटक है उन्हें मिलकर समाधान निकालना हैं जिनमे से प्रत्येक इस प्रश्न के भीतर से अपना अर्थ खोजता है। [2]

लोकमत एवं मानवीय मुल्यों की स्थापना: समाज में व्यक्ति का महत्व असंदिग्ध है,लेकिन समिष्ट के लिए व्यष्टि को समर्पित किया जा सकता है ,यह इस युग की मांग है।राम अपनी प्रज्ञा और विवेक को परिषद् की इच्छा के सामने विसर्जित कर देते है।जागरूक मानव अपनी स्वतंत्रता को किसी भी मूल्य पर नही छोड़ सकता है।उपनिवेशवाद और साम्रज्यवाद का विरोध करना युगीन चेतना है।सामाजिक चेतना और व्यक्ति चेतना को विभाजित करके नही देखा जा सकता।राम अपना संशय और युद्ध से बचने का निर्णय थोपन नही चाहते।एक शासक को लोकमत का आदर करना चाहिए,राम ने अपना निर्णय जन समर्थन पाकर ही किया।राम मानव सत्य की खोज करना चाहते है।रक्तपात किसी भी खोज का समाधान नही हो सकता।वह समाधान मानवीय गुणो के द्वारा मानव के भीतर से ही उपजेगा। राम कहते है –

मैं सत्य चाहता हुँ/ युद्ध से नहीं / खड़्ग से नहीं / मानव का मानव से सत्य चाहता हूँ। [3]

राम ने उन्हीं मानवीय मूल्यों की स्थापना की,जिससे दक्षिण प्रदेश को स्वातंत्रय–भाव से भरा हैं।

राम के मन में संशय का उदय युद्ध की समस्या को लेकर होता है।शान्ति स्थापना के लिए युद्ध अनिवार्य और अपरिहार्य है।श्री नरेश मेहता के अनुसार युद्ध आज की प्रमुख समस्या हैं।संभवतः सभी युग की इसी विभीषिका को सामाजिक एवं वैयत्कित्व धरातल पर सभी युगो में भोगा जा रहा हैं।विभीषण का चिंतन और भी तीव्र है।नैतिक मूल्यो की रक्षा और अनैतिकता के विरोध में ही उसे राष्ट्र विरोधी कार्य करना पडा । राम ऐतिहासिक काल के आरम्भ में युद्ध के बीज नही बोना चाहते है आने वाली पीढ़ी इस रक्तपात को अपना सकती है।नर मेध के पश्चात भी शान्ति स्थापना का क्या भरोसा राम युद्ध –संन्धि सभी से मुक्त होना चाहते है।इतिहास के हाथो वाण

बनने से अधिक अच्छा है स्वयं हम अंधेरे में यात्रा करते हुए खो जाएं राम तो मानवता को जगाना चाहते है–

मैं केवल युद्ध को बचाना चाहता / रहा हूँ बन्धु!

मानव में श्रेष्ठ जो विराजा है/उसको ही।

हाँ,उसको ही जगाना चाहता रहा हुँ बन्धु ![4]

राम नही चाहते कि उनकी नितान्त व्यक्तिगत समस्याएं ऐतिहासिक कारणो को जन्म दे।उनका संशय प्रथम होते हुए भी अंतिम नही है।युद्ध विजय होने वाली प्राप्ति मिथ्या है–इसलिए नरसंहार के व्यामोह के प्रति उन्हें वितृष्णा हैं। यह भाव कायरता के कारण नही बल्कि युद्ध विरोधी होने के कारण हैं–

लक्ष्मण में नहीं हूँ कापुरूष युद्ध मेरी नही है कुण्ठा पर युद्धप्रिय भी नही ।

सीता की प्राप्ति के लिए नरसंहार किया जाए,तो आने वाली पीढ़ी क्या कहेगी।कुल विनाश का निमित्त वे अपने को पहले ही मान चुके है,अतः जन–विनाश का निमित्त बनना उन्हे त्याज्य लगता हैं।

नरेश मेहता का प्रबंध काव्य प्रवाद पर्व राम कथा पर आधारित है।इस प्रवाद पर्व में सीता और राम का मिथक है।प्रवाद पर्व 1975 में लिखा गया और 1977 में प्रकाशित हुआ। राम और कृष्ण भारतीय संस्कृति के अंक्षशा और देशानतर रेखाए है उसी तरह राम और कृष्ण का चरित्र भारतीय संस्कृति को आवृत करता है।

प्रवाद पर्व में नरेश मेहता ने राम को देवता नही माना है।वे कहते हैं कि देवता को हम मानवीय गुणो से लेस करके प्रस्तुत करे और यही कारण है कि प्रवाद पर्व मे नरेश मेहता जिस राम को लेते है उस राम के उपर जो ईश्वरत्त का आवरण है वह हटा देते है और बिसुद्ध मनुष्य के रूप म पेस करते है।एक राजा के रूप मे प्रस्तुत करते हैं हम प्रवाद पर्व के जिस राम की चर्चा कर रहे है राम को हम देवता मानकर नही करेगे और हमारे मन में एक उपासना का भाव है तो उससे हमे मुक्त होना होगा ।

राम और युधिष्ठिर भरतीय मनीषा के आदर्श रहे है।श्री नरेश मेहता ने इनके चरित्र को आधार बनाकर रचनाएं की है । कहने की आवश्यकता नही है कि ये आदर्श चरित्र जब अपने आदर्श के व्यूह को भेदकर व्यक्ति–परिधि में प्रवेश करते है– इनकी मानवीय व्यंजना कविवर मेहता ने की है।अपनी व्यक्त्विहीनता पर प्रवाद पर्व के राम का यह कथन मार्मिक बन पड़ा है–

राम!यही है मनुष्य का प्रारब्ध,कि कर्म

निर्मम कर्म करता ही चला जाए

भले ही वह कर्म

धारदार अस्त्र की भॉति

न केवल देह

बल्कि उसके व्यत्क्त्वि और

सारी रागात्मिकता को भी काटकर फेक दे।[6]

नरेश मेहता भारतीय संस्कृति के हिमायती है।लेकिन नरेश मेहता भारतीय संस्कृति के हिमायती होने के बावजूद अंध भक्त नही रखते जहा पर भी भारतीय संस्कृति में विसंगतिया दिखाई देती है ।नरेश मेहता उसकी खुली आलोचना करते है।प्रवाद पर्व का आरम्भ होता है सबसे पहले इतिहास और प्रतिइतिहास से । सबसे पहले राम के माध्यम से गीता के निष्काम कर्म की बात करते है।राम गीता के निष्काम कर्म की जो आलोचना करते है इसका मतलब है हमारे भीतर का जो राम भाव है वह आज के युग में खत्म होता जा रहा है।उस राग की प्रसांगिकता को उसके रहने की संवेदना को नष्ट होने पर वह चिंता व्यक्त करते है और यही बात दिनकर ने भी कुरूक्षेत्र खण्ड काव्य बहुत पहले उठाई थी।[7]

आज के युग की सबसे बडी समस्या यह है कि मनुष्य संवेदना से और भावना से अलग होता जा रहा है जहा पर नरेश मेहता प्रवाद पर्व राम के माध्यम से उसकी आलोचना करवाते है।और कहते है कि राग तत्व तो हमारे भीतर होना ही चाहिए और नही होगा तो बुद्धि बाद से प्रेरित होगा ।

व्यक्ति स्वतंत्रता की रक्षा करना और वाणी की स्वतंत्रता की रक्षा की करना वाणी की स्वंतत्रता की चर्चा करते है रावण एक दुराचारी राजा था उसें राज्य में वाणी की स्वतंत्रता नही थी।सारे राजा दिकपाल सभी देवता और सभी प्रजा उसके सामने हाथ जोडे खड़ी रहती थी।उसकी वाणी ही कानून था,लेकिन उसकी साशन व्यवस्था ठीक नही थी यहॉ पर रावण की निरंकुशता रावण की तानाशाही की बात की जा रही हैं।लेकिन इसके संकेत आपातकाल 1975 के लिए दिए गए है।प्रवाद पर्व भी 1975 में लिखा गया था और कवि को इस बात का डर था कि इस काव्य को जब्त ना कर लिया जाये इसलिए इसका प्रकाशन 1977 जनता के कानून में कराया था।राम बार–बार रावण की शासन व्यवस्था की बात करते है और बताते है कि इसीलिए विभीषण ने विद्रोह किया था।[8]

महाप्रस्थान का स्त्रोत महाभारत है।सहस्त्रों वर्षों से भारतीय साहित्य इस महागाथा के अटूट स्त्रोत से अभिनव सृष्टि करता रहा हैं।कवि ने अपने आधुनिक चितंन के लिए इसका आश्रय लिया हैं। नरेश मेहता का महाप्रस्थान दो खण्डो में विभक्त है। आलोचना खण्ड और व्याख्या खण्ड, आलोचना खण्ड मे नरेश मेहता के साहित्यक,व्यक्तित्व तथा महाप्रस्थान काव्य के कथानक चित्रण समस्याएं, प्रकृतिक प्रेम,काव्य सौन्दर्य आदि पर प्रकाश डाला गया है।'व्याख्या खण्ड' मे 'महाप्रस्थान' की संपूर्ण व्याख्या प्रस्तुत की गई है।प्रसंग और व्याख्या के साथ ही 'विशेष ' के अंतरगर्त काव्य कृति के व्याख्या स्थल के साहित्यक सौंदर्य का भी उद्घाटन किया गया है।

महाप्रस्थान महाभारत के अंतिम सर्ग है। है।महाप्रस्थान खण्ड काव्य को तीन भागो में बाटा गया है यात्रा पर्व,स्वाहा पर्व और स्वर्ग पर्व। 18 दिन के युद्ध में जो भीषण पर संहार होता है।उसके कारण युद्धिष्ठर बहुत व्यथित होते है।

युद्धो, प्रतिहिंसाओं के दावानल में

न कृष्ण ,न पार्थ–

न तुम,न मैं

कोई भी सुरक्षित नही रह पाता।।[9]

वे राजा बनते है,राज्य करते है और अंत में स्वर्गारोहण के लिए प्रस्थान करते है। महाभारत का युद्ध समाप्त होने के वाद पॉच पाण्डव तथा दौपती हिमालय की ओर प्रस्थान करते है तब उनकी मानसिक स्थिति क्या है।इसका चित्रण किया गया है।यात्रा पर्व मे कवि ने हिमालय के सौंदर्य का वर्णन किया गया है और निराश अवस्था में चल रहे है,पाण्डव विजय हुए हैं लेकिन विनाश करने के लिए सभी दुखी है। युद्ध भले ही समाप्त हो गया लेकिन मन में युद्ध चलता रहता है।स्वाहा पर्व में सभी एक एक कर वर्फ मे समा जाते है और अंतिम सर्ग में युद्धिष्ठर स्वर्ग के द्वार तक पहॅुचते है।

महाप्रस्थान के माध्यम से कवि यह बताना चाहते कि आज प्रत्येक व्यक्ति के सामने जो समस्या है वह उसके व्यक्तिव और चरित्र के कारण ही है ।महाप्रस्थान के

बहाने कवि ने आधुनिक स्थिति तथा समस्याओं कों प्रस्थान किया गया है । युद्ध या हिंसा किसी समस्या का समाधान नही हैं ।आधुनिक मानव संघर्ष तथा तनाव से ग्रस्त है।

नरेश मेहता को अभिव्यक्ति एक सामाजिक उपादान है,बहुत बडी सामाजिक उपलब्धि है इसके माध्यम से परस्पर विचारो का आदान–प्रदान होता हैं साथ ही प्रीती और पहचान भी प्रगाढ़ भी होती है।कविवर नरेश मेहता का स्पष्ट अभिमत है।कि अभिव्यक्ति मानवता के विकास विस्तार के

लिए आवश्यक है।जिस दिन अभिव्यक्ति को समाप्त कर दिया जायेगा वह दिन दुभाग्यपूर्ण दिन होगा।–

गूँगेपन से कहीं श्रेयश है/ वाचालता।

जिस दिन मनुष्य अभिव्यक्ति हीन हो जायेगा

वह सबसे अधिक

दुर्भाग्यपूर्ण दिन होगा।[10]

नरेश मेहता कृत 'शबरी' रामायण की घटना पर आधारित आधुनिक खण्ड काव्य है जिसमे वर्ण व्यवस्था की समस्या को उठाया गया हैं कवि ने कहॉ है कि अन्त्यज जाति से संबंधित व्यक्ति भी अपने कर्मो में उर्ध्वता प्राप्त कर सकता हैं।व्यक्ति की अस्मिता का आग्रह और प्रतिष्ठा आज के युग का अत्यनत महत्वर्पूण प्रश्न है।निम्नतम धरातल पर वैठा हुआ व्यक्ति भी अपनी अस्मितता को पहचान कर अपने भीतर के प्रकाश को अजोकित कर महान से महान लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता हैं। शबरी खण्ड काव्य का दुसरा प्रश्न स्त्री पुरूष के संबंधों से घिरा हुआ हैं शबरी मंतंग ऋषि के आश्रम में रहा करती थी,आश्रमवासी को मतंग ऋषि का यह निर्णय स्वीकार नही था।कवि यहॉ स्पष्ट करना चहते है कि समाज में गली–सडी परंपराओं और रूढियों को तोडनें वाले ज्ञानी पुरूषो को समाज अनेक बार बहिष्कृत कर देता है। [11]

शबरी के माध्यम से यह प्रश्न उठाया गया है कि सारे मानवीय संबंध शरीर की सीमा में बंधे है।हद्‌य की उदारता को पहचानने में मनुष्य आज भी आगे नही बढा हैं।मनुष्य का संकल्प उसकी प्रज्ञा ,उसकी एकान्तनिष्ठता,उसकी अविचलित कर्म शक्ति सब कुछ संभब कर सकती है।यही इस खण्ड काव्य की अंतिम ध्वनि है। [12]

नरेश मेहता जी के खण्ड काव्यो में भारत की प्रचीन संस्कृति को आधुनिक सभ्यता से जोडने का प्रयास किया गया है।इन खण्ड काव्यो में आधुनिक युगबोध तथा आधुनिक मानव का मानसिक संघर्ष चित्रित किया गया हैं।इसमे कवि का उद्‌देश महाभारत की कथा बताना नही है बल्कि महाभारत के बहाने आज के युग की जटिल स्थिति का चित्रण करना है।

श्री नरेश मेहता मूलतः उदात्त भावबोध के कवि हैं।कवि की रचनाओं में उनका समय कम मात्रा में पाया जाता हैं।इनका काव्य–रागात्मक व रहस्यपूर्ण है।परन्तु उसमें प्रकृतिक वैभव का चरमोत्कर्ष है और वह सांस्कृतिक–निष्ठा से भराहुआ है।यही कारण है कि भारत वर्ष की विशाल लोकोन्मुख सांस्कृतिक –परंपरा उनमें सुरक्षित हैं।मूलतःइसी कारण वश इनकी सचनाओं में विद्यमान सांस्कृतिक–चेतना और युगबोध हमें आकर्षित करती है।

नरेश मेहता के चारो प्रबंध काव्य संशय की एक रात,महाप्रस्थान , प्रवाद पर्व,शबरी में मानवीय संवेदना को केन्द्रीय विचार के रूप में रखा है। इनहोंनें शबरी को छोडकर तीनो प्रबंध काव्यो में युद्ध की समस्या को मुख्य रूप से उठाया गया है।संशय की एक रात में श्री राम को मानवीय रूप में लिया है। सेतु बंध और युद्ध के पहले की रात का वर्णन बढे ही मानवीय ढंग से किया है। राम की संवेदनाए उनके मन में चलने वाला अंतरद्वन्द बढे ही मार्मिक तरीके से स्पष्ट किया गया है। क्या युद्ध होना चाहिए? क्या यह युद्ध वैयक्तिक है या सामाजिक? राम के साथ गरिमा का बोध होता है।उनहें आधुनिक बोध के साथ संयोजित करना कठिन काम है।कारण कि युग की गरिमा दूसरे युग की गरिमा हो, इसकी कोई स्वीकृति नहीं।ऐसी स्थिति में विभिन्न गरिमा को योजित करना बढ़ा ही कठिन कार्य था जो नरेश मेहता जी ने बढे ही रोचक पूर्ण ढ़ंग से किया है।

प्रवाद पर्व में भी राम को देवता नही माना हैं वे राम को मानवीय ढंग से प्रस्तुत करते हैं। महाप्रस्थान में युद्ध के बाद पाण्डवों के मन के चलने वाले अंतरद्वन्द को लिया है और उनकी मानसिक स्थिति का चित्रण किया गया हैं। 'शबरी' में शबरी की अध्यात्मिकता को भक्ति के सर्वोच्य शिखर पर स्थापित किया है।

नरेश मेहता द्वारा रचित चारो खण्ड काव्यो की रचना पौराणिक मिथको के आधार पर हुई।यहॉ पर विचारणीय तथ्य है कि इन चारो पौराण्कि आख्यानो में नरेश मेहता ने नितान्त आधुनिक समस्याओं का समावेश कर काव्य की दूरी को समाप्त कर दिया है।आधुनिक संबंधों के समाहार से नरेश मेहता ने कथा वस्तु को एक नई अर्थवत्ता दी है।सभी पात्र मानव के रूप में चित्रित हुए है। शबरी खण्ड काव्य को छोडकर शेष तीनो में युद्ध की समस्या पर विचार किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ–

1 नरेश मेहता,हिंदी का गध्य साहित्य,रामचन्द्र तिवारी,
2 संशय की एक रात,लोकभारती प्रकाशन,2012,पृ॰1
3 संशय की एक रात,लोकभारती प्रकाशन, पृ॰ 41
4 संशय की एक रात ,पृ॰ 19
5 प्रवाद पर्व,लोकभारती प्रकाशन 2012
6 प्रवाद पर्व लोकभारती प्रकाशन 2012 पृ॰ 40–41
7–8 प्रवाद पर्व लोकभारती प्रकाशन 2012
9 महाप्रस्थान पृ॰ 67
10 प्रवाद पर्व पृ॰ 43
11–12 शबरी लोकभारती प्रकाशन2012